OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

# राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार: कला, काव्य और संस्कृति का अंतर्संबंध

**जितेंद्र मछिंद्रनाथ थोरात**
शोध छात्र
ललित कला विभाग, नंदलाल बोस सुभारती कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत
ई-मेल: artthorat86@gmail.com
**डॉ० सोनल भारद्वाज**
शोध निर्देशक
ललित कला विभाग, नंदलाल बोस सुभारती कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन,
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत
ई-मेल: sonalb2307@gmail.com

**सारांश**
भारतीय लघुचित्रकला भारतीय सांस्कृतिक एवं कलात्मक परंपरा की एक महत्वपूर्ण धरोहर है, जिसमें भाव, सौंदर्य, काव्य और आध्यात्मिक चेतना का अद्वितीय समन्वय दृष्टिगोचर होता है। मध्यकालीन भारतीय कला में राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्र शैलियों ने विशेष स्थान प्राप्त किया, जिनमें संयोग श्रृंगार का अत्यंत सजीव, भावपूर्ण तथा सौंदर्यपरक चित्रण देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोधपत्र "राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार: कला, काव्य और संस्कृति का अंतर्संबंध" शीर्षक के अंतर्गत इन तीनों प्रमुख लघुचित्र शैलियों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति, उसके कलात्मक स्वरूप, साहित्यिक आधार तथा सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय काव्यशास्त्र में श्रृंगार रस को रसों का राजा माना गया है, जिसमें संयोग एवं वियोग दोनों अवस्थाएँ सम्मिलित हैं। संयोग श्रृंगार प्रेम, आकर्षण, मिलन, अनुराग एवं भावात्मक एकत्व की अभिव्यक्ति का प्रतीक है। भारतीय लघुचित्रकला में यह भाव विशेष रूप से राधा-कृष्ण प्रेमलीला, नायक-नायिका भेद, ऋतु-वर्णन तथा दरबारी प्रेम प्रसंगों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। राजस्थानी शैली में लोकजीवन, भक्ति एवं कृष्ण-लीला का रंगप्रधान और प्रतीकात्मक स्वरूप दिखाई देता है मुगल शैली में दरबारी संस्कृति, यथार्थवाद तथा सौंदर्यबोध का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है जबकि पहाड़ी शैली में कोमल भावाभिव्यक्ति, प्रकृति-सौंदर्य और आध्यात्मिक प्रेम का अत्यंत संवेदनशील चित्रण प्राप्त होता है।
इस शोधपत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय लघुचित्र केवल दृश्य कला नही हैं, बल्कि वे तत्कालीन समाज, संस्कृति, साहित्य, संगीत एवं धार्मिक चेतना के जीवंत दस्तावेज भी हैं। संयोग श्रृंगार के चित्रण में कलाकारों ने रंग, रेखा, मुद्रा, वेशभूषा, प्रकृति तथा प्रतीकों के माध्यम से मानवीय भावनाओं को कलात्मक रूप प्रदान किया। इन चित्रों में साहित्य और चित्रकला का गहरा अंतर्संबंध भी विद्यमान है, क्योंकि अनेक चित्र रीतिकालीन काव्य, गीतगोविंद, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई तथा कृष्णभक्ति साहित्य से प्रेरित हैं। शोध में तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए तीनों शैलियों की विशेषताओं, समानताओं एवं भिन्नताओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि संयोग श्रृंगार भारतीय सांस्कृतिक चेतना का केवल लौकिक पक्ष नही, बल्कि आध्यात्मिक एवं दार्शनिक संवेदनाओं का भी प्रतिनिधित्व करता है। वर्तमान समय में भी इन लघुचित्रों का सौंदर्यबोध, सांस्कृतिक महत्व एवं कलात्मक प्रभाव भारतीय कला-जगत में प्रासंगिक बना हुआ है।

**प्रमुख शब्दः** संयोग श्रृंगार, भारतीय लघुचित्रकला, राजस्थानी शैली, मुगल चित्रकला, पहाड़ी चित्रकला

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

**प्रस्तावना**

भारतीय लघुचित्रकला भारतीय कला परंपरा का एक महत्वपूर्ण एवं समृद्ध अध्याय है, जिसमें भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म, साहित्य तथा सौंदर्यबोध का बहुआयामी स्वरूप परिलक्षित होता है। मध्यकालीन भारत में विकसित राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्र शैलियाँ न केवल दृश्य कला की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति हैं, बल्कि वे तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना एवं भाव-संवेदनाओं की भी प्रतिनिधि मानी जाती हैं। इन चित्रों में विशेष रूप से "संयोग श्रृंगार" का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली रूप में सामने आता है, जिसमें प्रेम, मिलन, अनुराग, भावात्मक एकत्व तथा मानवीय संवेदनाओं का कलात्मक रूपांतरण दिखाई देता है। भारतीय काव्यशास्त्र में श्रृंगार रस को रसों का राजा कहा गया है और इसकी संयोग अवस्था प्रेम की पूर्णता तथा सौंदर्यात्मक अनुभूति का प्रतीक मानी जाती है (देहेजिया, 1997)।

राजस्थानी लघुचित्रों में कृष्ण-भक्ति, लोकजीवन एवं प्रतीकात्मक रंग-योजना के माध्यम से संयोग भाव को अभिव्यक्ति मिली, जबकि मुगल चित्रकला में दरबारी जीवन, यथार्थवाद तथा सूक्ष्म चित्रण शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। दूसरी ओर पहाड़ी चित्रकला में प्रकृति, प्रेम और आध्यात्मिक भावनाओं का अत्यंत कोमल एवं लयात्मक रूप चित्रित हुआ है (ब्रिटानिका, 2026)। इन तीनों शैलियों में राधा-कृष्ण प्रेम, नायक-नायिका भेद, रागमाला तथा ऋतु-वर्णन जैसे विषयों के माध्यम से संयोग श्रृंगार को कलात्मक एवं सांस्कृतिक आयाम प्राप्त हुए।

भारतीय लघुचित्रकला का साहित्य एवं काव्य से गहरा संबंध रहा है। गीतगोविंद, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई तथा भागवत पुराण जैसे ग्रंथों ने चित्रकारों को विषयवस्तु एवं भावाभिव्यक्ति प्रदान की (आर्चर, 1973)। चित्रकारों ने रंग, रेखा, मुद्रा, प्रकृति एवं प्रतीकों के माध्यम से प्रेम एवं सौंदर्य को दृश्यात्मक भाषा में रूपांतरित किया। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार की कलात्मक, काव्यात्मक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है, जिससे भारतीय लघुचित्रकला की सौंदर्यपरक एवं सांस्कृतिक परंपरा को समझा जा सके।

**शोध की पृष्ठभूमि एवं समस्या का प्रतिपादन**

भारतीय लघुचित्रकला की विभिन्न शैलियाँ मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति रही हैं। राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में धार्मिक, साहित्यिक एवं प्रेमप्रधान विषयों का व्यापक चित्रण मिलता है, जिनमें संयोग श्रृंगार विशेष रूप से प्रमुख है। इन चित्रों में राधा-कृष्ण प्रेम, नायक-नायिका भेद, संगीत, ऋतु एवं प्रकृति के माध्यम से प्रेम और सौंदर्य का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है (ब्रिटानिका, 2026इ)। यद्यपि भारतीय लघुचित्रकला पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि संयोग श्रृंगार के संदर्भ में कला, काव्य और संस्कृति के अंतर्संबंधों का तुलनात्मक एवं समन्वित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

विशेष रूप से यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि विभिन्न चित्रशैलियों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति किस प्रकार भिन्न सांस्कृतिक एवं सौंदर्यात्मक दृष्टियों को प्रस्तुत करती है। मुगल शैली में जहाँ यथार्थवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है, वही राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रों में भावप्रधानता और आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली है (ब्रिटानिका, 2026)। अतः इस शोध का मुख्य उद्देश्य इन तीनों शैलियों में संयोग श्रृंगार की कलात्मक संरचना, साहित्यिक प्रेरणा तथा सांस्कृतिक प्रतीकों का विश्लेषण करना है, जिससे भारतीय लघुचित्रकला की बहुआयामी परंपरा को समग्र रूप में समझा जा सके। (एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका)

**शोध के उद्देश्य**

- राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
- भारतीय लघुचित्रकला में कला, काव्य और संस्कृति के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना।
- संयोग श्रृंगार से संबंधित राधा-कृष्ण, नायक-नायिका एवं प्रेम प्रतीकों की कलात्मक संरचना का अध्ययन करना।
- विभिन्न चित्रशैलियों में रंग, रेखा, रूप एवं भाव-सौंदर्य की तुलनात्मक समीक्षा करना।
- भारतीय काव्य परंपरा एवं भक्ति आंदोलन के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- संयोग श्रृंगार की सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

- राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी चित्रशैलियों की समानताओं एवं भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पना**

- राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति भारतीय सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है।
- भारतीय लघुचित्रकला में कला एवं काव्य का गहरा अंतर्संबंध विद्यमान है।
- पहाड़ी एवं राजस्थानी चित्रशैलियों में आध्यात्मिक एवं भावप्रधान प्रेम की अभिव्यक्ति मुगल शैली की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है।
- संयोग श्रृंगार के चित्रण में रंग, प्रकृति एवं प्रतीकों का प्रयोग भाव-संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम है।
- भक्ति आंदोलन एवं कृष्ण साहित्य ने भारतीय लघुचित्रकला के विषय एवं शैली को गहराई से प्रभावित किया।
- भारतीय लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार केवल सौंदर्यात्मक विषय नही, बल्कि सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अभिव्यक्ति भी है।

**शोध की आवश्यकता एवं महत्व**

भारतीय लघुचित्रकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर है, जिसमें कला, साहित्य, संगीत, धर्म एवं समाज का समन्वित स्वरूप दिखाई देता है। राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी चित्रशैलियाँ भारतीय सौंदर्यबोध एवं भाव-संवेदनाओं की विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ हैं। इन शैलियों में संयोग श्रृंगार का चित्रण केवल प्रेम का दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण नही, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिकता एवं मानवीय अनुभूतियों का प्रतीक भी है। वर्तमान समय में भारतीय पारंपरिक कला के संरक्षण एवं पुनर्पाठ की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

यह शोध भारतीय लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार की कलात्मक एवं सांस्कृतिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कला और साहित्य के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करता है। साथ ही यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि भारतीय चित्रकला केवल सजावटी कला नही, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। इस शोध के माध्यम से भारतीय लघुचित्रकला की सौंदर्यपरक विशेषताओं, प्रतीकों तथा भावात्मक संरचनाओं को समझने में सहायता मिलेगी। यह अध्ययन कला इतिहास, भारतीय संस्कृति, सौंदर्यशास्त्र तथा साहित्य के शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा भारतीय कला परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन में भी योगदान प्रदान करेगा।(एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका)

**शोध पद्धति**

प्रस्तुत शोधपत्र “राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार: कला, काव्य और संस्कृति का अंतर्संबंध” भारतीय लघुचित्रकला की तीन प्रमुख शैलियों में संयोग श्रृंगार की कलात्मक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध में गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक (शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य केवल चित्रों के बाह्य स्वरूप का अध्ययन करना नही है, बल्कि उनके अंतर्निहित भाव, प्रतीक, सांस्कृतिक संदर्भ, साहित्यिक आधार तथा सौंदर्यपरक संरचना का गहन विश्लेषण करना भी है।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक, तुलनात्म, व्याख्यात्मक तथा कला-विश्लेषणात्मक पद्धतियों का समन्वित रूप से प्रयोग किया गया है। शोध के अंतर्गत राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों का चयन उनके विषय, शैली, भावाभिव्यक्ति तथा संयोग श्रृंगार से संबंधित चित्रण के आधार पर किया गया है। इन चित्रों में राधा-कृष्ण प्रेम, नायक-नायिका भेद, रागमाला, बारहमासा, गीतगोविंद तथा कृष्ण-लीला संबंधी चित्रों को अध्ययन का मुख्य आधार बनाया गया है।

शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्लीय राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घाय विभिन्न कला दीर्घाओं, संग्रहालयों एवं प्रकाशित चित्र-संग्रहों में उपलब्ध लघुचित्रों का अध्ययन सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त गीतगोविंद, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई, भागवत पुराण तथा रीतिकालीन काव्यग्रंथों का उपयोग भी प्राथमिक साहित्यिक स्रोतों के रूप में किया गया है। इन ग्रंथों ने लघुचित्रों की विषयवस्तु एवं भावाभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया है।

द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत भारतीय कला इतिहास, लघुचित्रकला, सौंदर्यशास्त्र, भारतीय काव्यशास्त्र तथा मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, जर्नलों एवं विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया है। विभिन्न विद्वानों जैसे डब्ल्यू. जी. आर्चर, आनंद कुमारस्वामी, बी. एन. गोस्वामी तथा विद्या देहेजिया के अध्ययन इस शोध में विशेष रूप से उपयोगी रहे हैं।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

शोध के अंतर्गत चित्रों का विश्लेषण निम्नलिखित आधारों पर किया गया है-

- विषयवस्तु एवं कथानक
- रंग योजना एवं रेखांकन
- नायक-नायिका एवं राधा-कृष्ण प्रतिमान
- भाव-संरचना एवं श्रृंगार अभिव्यक्ति
- प्रकृति एवं प्रतीकों का प्रयोग
- सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रभाव
- साहित्य एवं काव्य से संबंध

तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत यह विश्लेषण किया गया है कि राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी शैलियों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति किस प्रकार भिन्न एवं विशिष्ट रूप में विकसित हुई। राजस्थानी शैली में जहाँ रंगप्रधानता एवं लोक-सांस्कृतिक प्रभाव दिखाई देता है, वही मुगल शैली में यथार्थवाद, दरबारी जीवन एवं सूक्ष्म चित्रण की प्रवृत्ति प्रमुख है। दूसरी ओर पहाड़ी शैली में कोमलता, प्रकृति-सौंदर्य तथा आध्यात्मिक प्रेम का अत्यंत संवेदनशील चित्रण प्राप्त होता है।

इस शोध में भारतीय काव्यशास्त्र के श्रृंगार रस सिद्धांत को भी सैद्धांतिक आधार के रूप में अपनाया गया है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, आचार्य विश्वनाथ के साहित्यदर्पण तथा रीतिकालीन काव्यधारा में वर्णित श्रृंगार के सिद्धांतों के माध्यम से चित्रों में व्यक्त भावों का विश्लेषण किया गया है। संयोग श्रृंगार को केवल लौकिक प्रेम के रूप में नही, बल्कि आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक के रूप में समझने का प्रयास किया गया है। शोध की प्रामाणिकता बनाए रखने हेतु सभी संदर्भों का चयन विश्वसनीय एवं प्रमाणित स्रोतों से किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त चित्रों, साहित्यिक ग्रंथों एवं ऐतिहासिक तथ्यों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध पद्धति भारतीय लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार की बहुआयामी अभिव्यक्तियों को समग्र एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करती है।

## भारतीय लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार: कला, काव्य एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ

### भारतीय लघुचित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय लघुचित्रकला भारतीय कला इतिहास की एक महत्वपूर्ण परंपरा है, जिसका विकास प्राचीन पांडुलिपि चित्रण से आरंभ होकर मध्यकालीन राजदरबारों तक विस्तृत हुआ। प्रारंभिक रूप से जैन एवं बौद्ध ग्रंथों की अलंकृत पांडुलिपियों में लघुचित्रों का प्रयोग दिखाई देता है, किंतु 16वी से 18वी शताब्दी के मध्य यह कला अपने उत्कर्ष पर पहुँची। मुगल शासनकाल में फारसी शैली एवं भारतीय परंपराओं के समन्वय से लघुचित्रकला को नई दिशा प्राप्त हुई (कूमारस्वामी, 1916)। अकबर के काल में चित्रकला को राजकीय संरक्षण मिला, जिसके परिणामस्वरूप दरबारी जीवन, युद्ध, प्रकृति तथा प्रेम विषयक चित्रों का विकास हुआ।

राजस्थानी शैली ने लोकजीवन, कृष्णभक्ति तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रमुखता दी, जबकि पहाड़ी शैली में भावात्मक कोमलता एवं प्रकृति-सौंदर्य का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है (ब्रिटानिका, 2026)। इन शैलियों में रागमाला, बारहमासा, गीतगोविंद एवं राधा-कृष्ण प्रेमलीला प्रमुख विषय रहे। भारतीय लघुचित्र केवल सजावटी कला नही थे, बल्कि वे सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के दृश्य दस्तावेज भी थे। इनके माध्यम से तत्कालीन समाज की भावनात्मक चेतना, आध्यात्मिकता एवं सौंदर्यबोध का अध्ययन संभव होता है। भारतीय लघुचित्रकला ने साहित्य, संगीत और काव्य परंपरा के साथ गहरा संबंध स्थापित करते हुए भारतीय कला को विश्व स्तर पर विशिष्ट पहचान प्रदान की।

### राजस्थानी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार की कलात्मक अभिव्यक्ति

राजस्थानी लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार का चित्रण अत्यंत भावपूर्ण, रंगप्रधान एवं प्रतीकात्मक रूप में दिखाई देता है। इस शैली में प्रेम, मिलन, राधा-कृष्ण लीला तथा नायक-नायिका संबंधों को आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ प्रस्तुत किया गया है। मेवाड़, बूंदी, किशनगढ़ तथा

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

मारवाड़ शैलियों में संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में विकसित हुई। किशनगढ़ शैली में विशेष रूप से राधा-कृष्ण प्रेम को अलौकिक सौंदर्य एवं आध्यात्मिक भावभूमि के साथ चित्रित किया गया है (गोस्वामी, 1992)।

राजस्थानी चित्रों में लाल, पीला, हरा एवं नीला जैसे चटकीले रंग प्रेम एवं भावनात्मक ऊर्जा के प्रतीक माने जाते हैं। चित्रकारों ने प्रकृति, कमल, बादल, वर्षा, वन एवं संगीत के माध्यम से संयोग भाव को प्रभावशाली बनाया। इन चित्रों में स्त्री आकृतियों की लंबी आँखें, कोमल मुद्राएँ तथा अलंकृत वेशभूषा सौंदर्य एवं श्रृंगार की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाती हैं। गीतगोविंद, रसिकप्रिया एवं बिहारी सतसई जैसे साहित्यिक ग्रंथों ने इन चित्रों की विषयवस्तु को गहराई से प्रभावित किया (देहेजिया, 1997)।

**आकृति 1:** रागमाला चित्र, मेवाड़ स्कूल। स्रोतः राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

राजस्थानी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार केवल लौकिक प्रेम का चित्रण नही है, बल्कि यह भक्ति एवं आत्मिक मिलन का प्रतीक भी है। राधा-कृष्ण संबंधों को प्रेम और भक्ति के आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे चित्रों में आध्यात्मिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक संवेदना का समन्वय स्थापित हुआ।

**मुगल लघुचित्रों में श्रृंगार, सौंदर्य एवं दरबारी संस्कृति**

मुगल लघुचित्रकला भारतीय एवं फारसी कला परंपराओं के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। मुगल शासकों, विशेषकर अकबर, जहाँगीर एवं शाहजहाँ के काल में चित्रकला को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। मुगल चित्रों में दरबारी जीवन, शिकार, युद्ध, प्रकृति तथा प्रेम प्रसंगों का अत्यंत सूक्ष्म एवं यथार्थवादी चित्रण मिलता है (बीच, 1992)। संयोग श्रृंगार के चित्रों में राजदरबारों की विलासिता, सौंदर्यबोध तथा अभिजात्य संस्कृति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

मुगल चित्रकारों ने मानव आकृतियों, वस्त्रों, आभूषणों एवं स्थापत्य का अत्यंत सूक्ष्म एवं यथार्थवादी चित्रण किया। प्रेम दृश्य प्रायः उद्यानों, महलों एवं संगीत सभाओं में चित्रित किए गए, जिनमें स्त्री-पुरुष संबंधों की कोमलता एवं भावात्मक निकटता दिखाई देती है। मुगल चित्रों में प्रकृति एवं

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

स्थापत्य का संतुलित उपयोग दृश्य को सौंदर्यात्मक गहराई प्रदान करता है। फारसी चित्रकला से प्रभावित सूक्ष्म रेखांकन एवं रंग-संतुलन मुगल शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं (ब्रिटानिका, 2026इ)।

**आकृति 2:** दरबारी प्रेमी मुगल मिनिएचर पेंटिंग में। **स्रोतः** विक्टोरिया और अल्बर्ट म्यूजियम।

यद्यपि मुगल चित्रों में लौकिक प्रेम एवं दरबारी जीवन की प्रधानता दिखाई देती है, फिर भी उनमें भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट रूप से उपस्थित है। रागमाला एवं प्रेम विषयक चित्रों में भारतीय काव्य परंपरा एवं संगीत संस्कृति का प्रभाव भी देखा जा सकता है। इस प्रकार मुगल लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार सौंदर्य, विलासिता एवं सांस्कृतिक अभिजात्यता का कलात्मक रूप बनकर उभरता है।

**पहाड़ी लघुचित्रों में राधा-कृष्ण प्रेम एवं भाव-सौंदर्य**

पहाड़ी लघुचित्रकला भारतीय चित्रकला की अत्यंत भावप्रधान एवं काव्यात्मक शैली मानी जाती है। हिमालयी क्षेत्रों में विकसित इस शैली में राधा-कृष्ण प्रेम, प्रकृति-सौंदर्य एवं भक्ति भाव का अत्यंत कोमल चित्रण प्राप्त होता है। कांगड़ा, गढ़वाल एवं बसोहली शैलियों में संयोग श्रृंगार का अत्यंत संवेदनशील एवं आध्यात्मिक स्वरूप दिखाई देता है (आर्चर, 1973)।

पहाड़ी चित्रों में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नही होती, बल्कि वह भावाभिव्यक्ति का सक्रिय माध्यम बनती है। हरे-भरे वन, पर्वत, नदियाँ, वर्षा, चाँदनी रात तथा पुष्प प्रेम एवं मिलन की भावनाओं को गहराई प्रदान करते हैं। चित्रकारों ने राधा-कृष्ण संबंधों को लौकिक प्रेम से ऊपर उठाकर आत्मिक एवं आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीक बनाया। विशेष रूप से कांगड़ा शैली में स्त्री आकृतियों की कोमलता, भावपूर्ण नेत्र तथा लयात्मक मुद्राएँ श्रृंगार रस की तीव्र अनुभूति कराती हैं (गोस्वामी - फिशर, 1992)।

गीतगोविंद एवं कृष्णभक्ति साहित्य का प्रभाव पहाड़ी चित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। चित्रों में संगीत, नृत्य एवं प्रकृति का सामंजस्य प्रेम एवं

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

भक्ति को एकीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। पहाड़ी शैली की विशेषता उसकी भावात्मक गहराई एवं आध्यात्मिक संवेदनशीलता है, जिसके कारण यह भारतीय लघुचित्रकला की सबसे काव्यात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण शैलियों में गिनी जाती है।

**आकृति 3:** बगीचे में राधा-कृष्ण, कांगड़ा स्कूल, 18वी सदी। **स्रोतः** मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट।

**संयोग श्रृंगार और भारतीय काव्य परंपरा का अंतर्संबंध**

| भारतीय काव्य परंपरा | लघु चित्रकला में प्रभाव | संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति |
|---|---|---|
| गीतगोविंद दृ जयदेव | राधा-कृष्ण प्रेम प्रसंगों का चित्रण | आध्यात्मिक एवं भावात्मक प्रेम |
| रसिकप्रिया - केशवदास | नायक-नायिका भेद | श्रृंगारिक मुद्राएँ एवं प्रेम संकेत |
| बिहारी सतसई | सूक्ष्म प्रेम भाव एवं काव्यात्मक संकेत | दृष्टि, प्रतीक्षा एवं मिलन भाव |
| भागवत पुराण | कृष्ण लीला एवं भक्ति | प्रेम एवं भक्ति का समन्वय |

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

| | | |
|---|---|---|
| रागमाला काव्य | संगीत एवं ऋतु संबंधी चित्र | भाव, संगीत एवं प्रकृति का संयोजन |
| बारहमासा काव्य | ऋतु एवं विरह-मिलन चित्रण | प्रकृति आधारित भावाभिव्यक्ति |

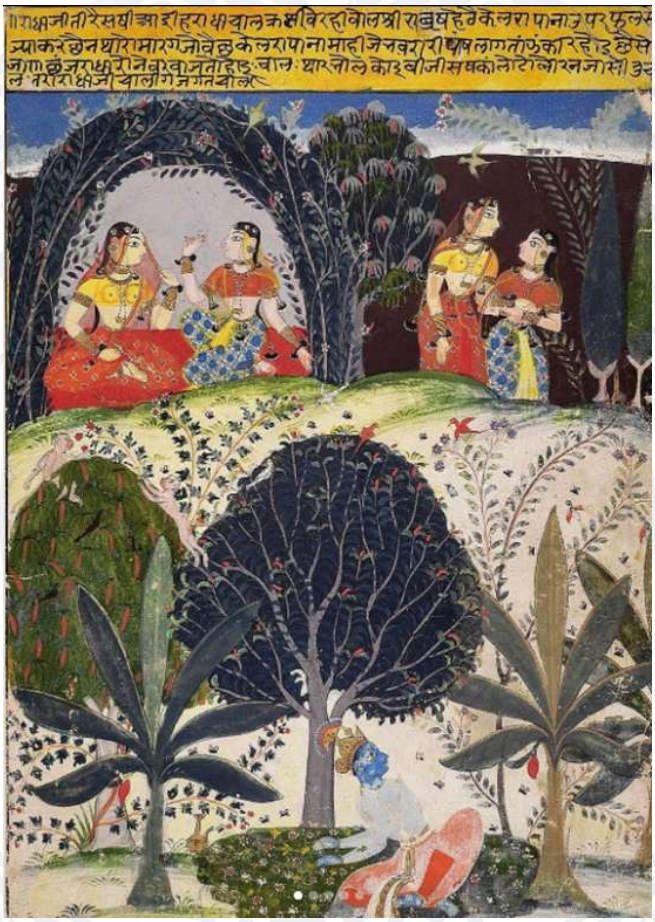

**आकृति 4:** गीता गोविंद उंदनेबतपचज से राधा-कृष्ण। **स्रोतः** क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट।

**संयोग श्रृंगार में सांस्कृतिक प्रतीक एवं सामाजिक संदर्भ**

भारतीय लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार केवल प्रेम का दृश्यात्मक चित्रण नही है, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति एवं धार्मिक चेतना का प्रतीकात्मक रूप भी है। चित्रों में प्रयुक्त कमल, मोर, बादल, वर्षा, चंद्रमा, वन एवं संगीत जैसे तत्व प्रेम, सौंदर्य, पवित्रता एवं भावनात्मक एकत्व के प्रतीक माने जाते हैं (देहेजिया, 1997)। राधा-कृष्ण संबंधों को लौकिक प्रेम से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक मिलन का रूप दिया गया, जो भक्ति आंदोलन की सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करता है।

संयोग श्रृंगार के चित्र तत्कालीन सामाजिक जीवन एवं दरबारी संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। मुगल चित्रों में दरबार, उद्यान एवं राजसी विलासिता का चित्रण अभिजात्य संस्कृति को दर्शाता है, जबकि राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रों में लोकजीवन एवं प्रकृति की निकटता अधिक दिखाई देती है। स्त्री-पुरुष संबंधों, वेशभूषा, आभूषण तथा संगीत सभाओं के माध्यम से मध्यकालीन समाज की सौंदर्य दृष्टि एवं सांस्कृतिक

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

मान्यताओं को समझा जा सकता है (बीच, 1992)।

इन चित्रों में प्रकृति एवं मानवीय भावनाओं का समन्वय भारतीय सांस्कृतिक दर्शन को भी प्रतिबिंबित करता है, जहाँ प्रेम को आध्यात्मिक अनुभूति एवं आत्मिक एकत्व का माध्यम माना गया है। इस प्रकार संयोग श्रृंगार भारतीय लघुचित्रकला में सांस्कृतिक प्रतीकों एवं सामाजिक जीवन का बहुआयामी दर्पण बनकर उभरता है।

**राजस्थानी, मुगल ,वं पहाड़ी 'शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन**

| आधार | राजस्थानी शैली | मुगल शैली | पहाड़ी शैली |
|---|---|---|---|
| प्रमुख विषय | कृष्णभक्ति, लोकजीवन, रागमाला | दरबारी जीवन, शिकार, प्रेम | राधा-कृष्ण प्रेम, प्रकृति |
| भाव अभिव्यक्ति | प्रतीकात्मक एवं रंगप्रधान | यथार्थवादी एवं सूक्ष्म | कोमल एवं भावात्मक |
| रंग योजना | चटकीले एवं गहरे रंग | संतुलित एवं प्राकृतिक रंग | हल्के एवं सौम्य रंग |
| प्रकृति का उपयोग | सजावटी एवं प्रतीकात्मक | संतुलित पृष्ठभूमि | भावात्मक एवं जीवंत |
| स्त्री आकृतिया | लंबी आँखें एवं अलंकरण | यथार्थवादी एवं दरबारी शैली | कोमल एवं लयात्मक |
| साहित्यिक प्रभाव | रसिकप्रिया, गीतगोविंद | फारसी एवं भारतीय साहित्य | कृष्णभक्ति एवं गीतगोविंद |
| सांस्कृतिक आधार | लोक एवं भक्ति संस्कृति | शाही एवं अभिजात्य संस्कृति | आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक संस्कृति |
| श्रृंगार स्वरूप | आध्यात्मिक एवं प्रतीकात्मक | लौकिक एवं दरबारी | भावात्मक एवं आध्यात्मिक |

**संयोग श्रृंगार की सौंदर्यात्मक एवं सांस्कृतिक प्रासंगिकता**

**रंग, रेखा, रूप एवं भाव-संरचना का विश्लेषण**

| विश्लेषण का आधार | राजस्थानी लघुचित्र | मुगल लघुचित्र | पहाड़ी लघुचित्र | संयोग श्रृंगार में प्रभाव |
|---|---|---|---|---|
| रंग योजना | चटकीले एवं गहरे रंग | संतुलित एवं प्राकृतिक रंग | सौम्य एवं हल्के रंग | प्रेम, उत्साह एवं भावात्मक ऊर्जा की अभिव्यक्ति |

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रेखांकन | मोटी एवं सजावटी रेखाएँ | सूक्ष्म एवं यथार्थवादी रेखाएँ | लयात्मक एवं कोमल रेखाएँ | भाव एवं मुद्रा को स्पष्ट करना |
| आकृतियों का रूप | अलंकृत एवं प्रतीकात्मक | वास्तविक एवं दरबारी शैली | कोमल एवं भावप्रधान | सौंदर्य एवं प्रेम की संवेदनशील अभिव्यक्ति |
| प्रकृति का प्रयोग | प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि | नियंत्रित एवं संतुलित | जीवंत एवं भावात्मक | प्रेम एवं मिलन की वातावरण निर्मिति |
| भाव-संरचना | भक्ति एवं श्रृंगार का समन्वय | लौकिक प्रेम एवं दरबारी संस्कृति | आध्यात्मिक एवं आत्मिक प्रेम | संयोग रस की अनुभूति को गहन बनाना |
| नेत्र एवं मुद्राएँ | बड़ी एवं अभिव्यंजक आँखें | यथार्थवादी दृष्टि | भावपूर्ण एवं कोमल नेत्र | प्रेम, प्रतीक्षा एवं अनुराग की अभिव्यक्ति |
| अलंकरण | आभूषण एवं वस्त्रों की सजावट | दरबारी वैभव | सरल किन्तु सौंदर्यपूर्ण | सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान |

राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में रंग, रेखा, रूप एवं भाव-संरचना का प्रयोग केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कलाकारों की भावात्मक एवं सांस्कृतिक दृष्टि को भी अभिव्यक्त करता है। चित्रकारों ने रंगों के माध्यम से प्रेम, मिलन, आनंद एवं आध्यात्मिक चेतना को दृश्यात्मक रूप प्रदान किया (गोस्वामी, 1992)।

**संयोग श्रृंगार में नायक-नायिका एवं राधा-कृष्ण प्रतिमान**

भारतीय लघुचित्रकला में नायक-नायिका एवं राधा-कृष्ण प्रतिमान संयोग श्रृंगार की प्रमुख अभिव्यक्तियों के रूप में विकसित हुए। भारतीय काव्यशास्त्र एवं रीतिकालीन साहित्य में नायक-नायिका भेद को प्रेम एवं श्रृंगार की भावात्मक अवस्थाओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जिसका प्रभाव लघुचित्रकला में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। चित्रकारों ने अभिसारिका, स्वाधीनभर्तृका, विरहोत्कंठिता तथा वासकसज्जा नायिकाओं के माध्यम से प्रेम, प्रतीक्षा, मिलन एवं अनुराग को दृश्यात्मक रूप प्रदान किया (क्रामरिश, 1983)।

राधा-कृष्ण प्रतिमान भारतीय लघुचित्रों में लौकिक एवं आध्यात्मिक प्रेम के आदर्श प्रतीक माने गए हैं। राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रों में राधा-कृष्ण संबंधों को भक्ति एवं आत्मिक मिलन के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि मुगल चित्रों में प्रेम संबंधों का अधिक लौकिक एवं दरबारी स्वरूप दिखाई देता है। चित्रकारों ने राधा के कोमल भाव, कृष्ण की आकर्षक मुद्रा, प्रकृति एवं संगीत के माध्यम से संयोग श्रृंगार को गहन भावात्मक स्वरूप प्रदान किया (देहेजिया, 1997)।

गीतगोविंद एवं रसिकप्रिया जैसे ग्रंथों ने इन प्रतिमानों को व्यापक कलात्मक आधार प्रदान किया। राधा-कृष्ण के माध्यम से प्रेम को केवल सांसारिक अनुभव न मानकर आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मिक एकत्व का प्रतीक माना गया। इस प्रकार नायक-नायिका एवं राधा-कृष्ण प्रतिमान भारतीय लघुचित्रकला में प्रेम, सौंदर्य एवं सांस्कृतिक संवेदनाओं के महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरते हैं।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

**भारतीय लघुचित्रकला पर साहित्य, संगीत एवं भक्ति आंदोलन का प्रभाव**

भारतीय लघुचित्रकला पर साहित्य, संगीत एवं भक्ति आंदोलन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। गीतगोविंद, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई एवं भागवत पुराण जैसे ग्रंथों ने चित्रकारों को विषयवस्तु एवं भावभूमि प्रदान की (आर्चर, 1973)। रागमाला चित्रों में संगीत एवं ऋतु-भाव का कलात्मक समन्वय दिखाई देता है। भक्ति आंदोलन के प्रभाव से राधा-कृष्ण प्रेम को आध्यात्मिक एवं आत्मिक प्रेम के रूप में चित्रित किया गया। विशेष रूप से राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रों में भक्ति एवं श्रृंगार का अद्भुत समन्वय मिलता है, जिसने भारतीय लघुचित्रकला को सांस्कृतिक एवं धार्मिक गहराई प्रदान की (गोस्वामी - फिशर, 1992)।

**समकालीन परिप्रेक्ष्य में संयोग श्रृंगार की प्रासंगिकता**

समकालीन समय में भी भारतीय लघुचित्रकला में संयोग श्रृंगार की प्रासंगिकता बनी हुई है। यह केवल ऐतिहासिक कला परंपरा नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पहचान एवं सौंदर्यबोध का महत्वपूर्ण स्रोत है। आधुनिक कलाकार एवं शोधकर्ता इन चित्रों के माध्यम से भारतीय प्रेम-दर्शन, भाव-संवेदना एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः समझने का प्रयास कर रहे हैं (बीच, 1992)। संग्रहालयों, कला दीर्घाओं एवं शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय लघुचित्रों का अध्ययन कला इतिहास एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में किया जा रहा है। संयोग श्रृंगार आज भी भारतीय कला एवं साहित्य में प्रेम, सौंदर्य एवं आध्यात्मिक चेतना की निरंतरता का प्रतीक बना हुआ है।

**निष्कर्ष**

प्रस्तुत शोधपत्र "राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघुचित्रों में संयोग श्रृंगार: कला, काव्य और संस्कृति का अंतर्संबंध" के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लघुचित्रकला केवल दृश्यात्मक सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति, साहित्य एवं आध्यात्मिक चेतना का सशक्त माध्यम भी है। राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी तीनों शैलियों में संयोग श्रृंगार को भिन्न कलात्मक दृष्टियों एवं सांस्कृतिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया गया है। राजस्थानी शैली में भक्ति एवं लोक-संवेदना, मुगल शैली में दरबारी सौंदर्य एवं यथार्थवाद तथा पहाड़ी शैली में भावात्मक कोमलता एवं आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति विशेष रूप से दिखाई देती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि भारतीय काव्य परंपराकृविशेषकर गीतगोविंद, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई एवं कृष्णभक्ति साहित्यकृने लघुचित्रों की विषयवस्तु एवं भाव-संरचना को गहराई से प्रभावित किया। चित्रकारों ने रंग, रेखा, प्रकृति, संगीत एवं प्रतीकों के माध्यम से प्रेम एवं श्रृंगार को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान किया। राधा-कृष्ण प्रतिमान भारतीय प्रेम-दर्शन एवं आत्मिक मिलन के प्रतीक के रूप में उभरते हैं।

यह शोध यह स्थापित करता है कि संयोग श्रृंगार भारतीय लघुचित्रकला में केवल लौकिक प्रेम का चित्रण नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, सौंदर्यबोध एवं आध्यात्मिक संवेदनाओं का समन्वित स्वरूप है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी इन लघुचित्रों का अध्ययन भारतीय कला एवं संस्कृति की ऐतिहासिक निरंतरता तथा सौंदर्यपरक परंपरा को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

**संदर्भ सूची**

1. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1973). पंजाब पहाड़ियों की भारतीय चित्रकारी. सौथेबी पार्क बर्नेट.
2. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1973). पंजाब पहाड़ियों की भारतीय चित्रकारीः पहाड़ी मिनिएचर पेंटिंग का सर्वे और इतिहास. स्मिथसोनीयन इंस्टिट्यूशन.
3. बीच, एम. सी. (1992). मुगल और राजपूत चित्रकारी. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. कूमारस्वामी, ए. के. (1916). राजपूत चित्रकारी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. देहेजिया, वी. (1997). भारतीय कला. फाइडन प्रेस
6. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका. (2026). पहाड़ी चित्रकारी. प्राप्त किया गया.
7. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका. (2026इ). मुगल चित्रकारी. प्राप्त किया गया.
8. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका. (2026ब). मेवाड़ चित्रकारी. प्राप्त किया गया.
9. गोस्वामी, बी. एन. (1992). भारतीय कला का सार. एशियन आर्ट म्यूजियम.
10. गोस्वामी, बी. एन., एवं फिशर, ई. (1992). पहाड़ी मास्टर्सः उत्तर भारत के दरबार चित्रकार. आर्टिबस एशिया पब्लिशर्स.
11. क्रामरिश, एस. (1983). भारत की कला. फाइडन प्रेस.